विचार बिन्दु

मूर्ख आदमी अपने बड़े से बड़े दोष अनदेखा करता है, किन्तु दूसरे के छोटे से छोटे दोष को देखता है। –संस्कृत सूक्ति

क्या हैं अखिल भारतीय सेवाओं से जनता को आशाएं–निराशाएं?

राज व्यवस्था राजशाही–सामंती हो, अधिनायकवादी हो, लोकतांत्रिक या कैसी भी हो राजकार्यों के सम्पादन, सतता के लिए स्थाई राज–सेवक तंत्र आवश्यक है। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश सरकार, उससे पहले ईस्ट इंडिया कम्पनी और विभिन्न कालों में भिन्न–भिन्न राज्यों की राजव्यवस्था संचालन के लिए, उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सरकारी अधिकारियों कर्मचारियों के स्थायी तंत्र थे।

आजादी के बाद पूर्ववर्ती समकक्ष सेवाओं इंडियन सिविल व पुलिस सेवाओं (ICS, IP) को IAS, IPS नामकरण के साथ चालू रखा गया। इन सेवाओं को भारतीय संविधान की धारा 312(2) में भारतीय प्रशासनिक व पुलिस सेवा नामकरण के साथ शामिल किया गया। इन्हें भारत की संसद द्वारा सृजित माना गया।

1952 में संसद द्वारा पारित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम के अंतर्गत इन सेवाओं के सृजन के लिए केंद्र सरकार को अधिकृत किया हुआ है। कालांतर में अखिल भारतीय वन सेवा का ओर गठन किया है। वर्तमानं में यही तीन सेवाएं अखिल भारतीय सेवाएं हैं।

आम आदमी का मुख्यत: IAS, IPS अधिकारियों से ज्यादा काम पड़ता है।

जिन क्षेत्रों विभिन्न श्रेणियों के संरक्षित वन क्षेत्र है, अभ्यारण है वहां के लोगों का और पर्यावरण से जुड़े कार्यों से प्रभावित लोगों का अधिकारियों से वास्ता पड़ता है।

** भारत नें लोकतांत्रिक–जनहितकारी राजव्यवस्था अपनाई है। इसमें लोकसभा, विधानसभाओं के चुनावों के आधार पर बहुमत प्राप्त दल की या गठबंधन की सरकारों का गठन होता है। मंत्रिमंडल सरकार का सर्वोच्च निकाय है। बहुमत प्राप्त सरकार पर अपनी नीतियों के अनुरूप और जनता से किए वायदों की पूर्ति के लिए कानून–नियम–नीतियां बनाने, लागू करने–करवाने का, जनता से व अन्य स्त्रोतों से प्राप्त धन के सदुपयोग का दायित्व है। सरकारें लोकसभा या विधानसभाओं में अपने निर्णयों, कर्तव्यों प्रति उत्तरदायी होती है।

IAS, IPS आदि सेवाओं से अपेक्षा:––यह आशा की जाती है कि इन सेवाओं के अधिकारी संविधान, उसके अनुसार निर्मित विधानों, नियमों की पालना करते हुए, पूर्ण निष्ठा, समर्पण, समानता, सक्षमता, राग–द्वेष–धर्म–जाती–किसी धार्मिक–सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनीतिक संगठन और स्वयं की व्यक्तिगत भावनाओं से रहित होकर, कार्य करते हुए सरकारी नीतियों का क्रियान्वयन करेंगे। इन सब बातों का ध्यान रखते हुए अपने अधीनस्थ अधिकारियों, कर्मचारियों का मार्गदर्शन कर, क्रियान्वयन करवाएंगे।

IAS, IPS अधिकारियों से जनता अपेक्षा करती है कि वे अपने दायित्वों, कार्यों के निष्पादन करते हुए जनता व उनके प्रतिनिधियों के साथ पूर्ण आदर सम्मान से उनके अभाव–अभियोगों–सुझाओं को सुनेंगे और यथासम्भव समाधान करेंगे।

मुख्यत: कलेक्टर, एसपी के कार्य कलापों से इन सेवाओं की छवि के बारे में आम आदमी अपने विचार बनाता है। आम आदमी जिला स्तर पर इन अधिकारियों में राज्य सरकार को देखता है।

एक बहुत ही संजीदा विधायक नें एक कलेक्टर से कहा कि सत्ता पक्ष के लोगों की सुनने के लिए तो सम्बंधित पार्टी के MLA व दूसरे जन प्रतिनिधि, पार्टी के कार्यकर्ता होते है। उनकी आवाज तो जिला व उपर तक पहुंच जाती है किन्तु जो विपक्ष के या गैर राजनीतिक लोग होते है वे आशा करते हैं कि कलेक्टर एसपी उनकी बात सहानुभूतिपूर्ण रुख के साथ सुनेंगे और समस्याओं का समाधान करने या करवाएंगे।

एक दूसरे संजीदा विधायक नें एक नवयुवक एञ्ध को कहा कि विधायक होने के नाते उनके पास लोग अपनी समस्याएं, अभियोग लेकर आएंगे और उनको अधिकारियों के पास पहुंचना, समाधान करवाना उनका कर्तव्य है। इसलिए उनकी अपेक्षा है कि उनकी बातों को विस्तार से, ध्यानपूर्वक सुना जाए––नियमों के अनुसार निर्णय करने के लिए अधिकारी स्वतंत्र है––उसमें उनका कोई आग्रह–दुराग्रह नहीं होगा।

राज व्यवस्था राजशाही-सामंती हो, अधिनायकवादी हो, लोकतांत्रिक या कैसी भी हो राजकार्यों के सम्पादन, सतता के लिए स्थाई राज-सेवक तंत्र आवश्यक है। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश सरकार, उससे पहले ईस्ट इंडिया कम्पनी और विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न राज्यों की राजव्यवस्था संचालन के लिए, उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सरकारी अधिकारियों कर्मचारियों के स्थायी तंत्र थे।

इस प्रकार के संजीदा जनप्रतिनिधि कम होते जा रहे है।

पार्टियां कार्य कर्ताओं का केवल भीड़ इक्कठी करवाने और नारे लगवाने में उपयोग करती है। उनका राज व्यवस्था व जन समस्याओं के उचित निवारण के तरीकों का प्रशिक्षण दिया ही नहीं जाता।

आईएएस अधिकारी जब नीति निर्माण करने के स्तर पर मंत्रियों के साथ कार्य करते है तब उनका परम् दायित्व है कि तथ्यों, कानून–नियमों के अनुसार उन्हें सर्वोत्तम राय दें। राय देने के उपरांत जो निर्णय मंत्री अथवा मंत्री मंडल का हो उसकी पूर्ण रूपेण पालन करें।

आईपीएस का दायित्व कानून व्यवस्था बनाए रखने और अपराध नियंत्रण, अनुसन्धान व अभियोजन है। इस दृष्टि से का कार्य क्षेत्र सीमित है किन्तु इस सेवा के अधिकारियों की निष्ठा, कार्य प्रणाली, दक्षता, व्यवहार का सरकारों की छवि बनाने या बिगड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जनता का आईएएस, आईपीएस के सम्बंध में यह परसेप्शन है कि इन अधिकारियों के सेवा शर्तें अन्य प्रादेशिक अधिकारियों–कर्मचारियों की तुलना में काफी ज्यादा है। इनके पास बहुत अधिकार होते है। वस्तुत: सरकार यही लोग चलाते है आदि, आदि।

** हाँ, इन अधिकारियों को किन किन पदों पर लगाया जाएगा, यह केंद्र व राज्य सरकार के स्तर पर तय होता है। प्रादेशिक सेवाओं की तुलना में वेतन,बहुत ज्यादा तो नहीं किन्तु कुछ अधिक होता है। पदोन्नतियां भी कमोबेश निश्चित समय सीमा में हो जाती है।

सबसे बड़ी बात यह है सरकारें इनके स्थानांतरण में पूर्णत: निरंकुशता नही अपना सकती। इन्हें आप पदस्थापन प्रतीक्षा में तो रख सकते है किंतु किसी की सनकों की पूर्ति के लिए हर किसी स्थान–पद पर नहीं लगाया जा सकता। पदस्थापन के स्थान भी अधिकांशत: जिला मुख्यालयों से नीचे नहीं है। अधिकारियों के भी पदस्थापना जिला मुख्यालय या चिन्हित अभ्यारणों आदि स्थानों पर ही लगा सकते है। राज्य सरकार निलंबित तो कर सकती है किंतु उसमें भी निरंकुशता पर नियंत्रण है।

***आज कल यह सुनना, पढना आम है कि मंत्री, विधायक, सत्ताधारी दल के कार्यकर्ता आरोप लगाते है कि अधिकारी उनकी नहीं सुनते। अधिकांस अधिकारी ऐसे नहीं होते किन्तु अपवाद भी सामने आते रहते है।

चाहे पोलिटीसियन्स का अपनी गैरवाजिब बात मनवाने के दुराग्रह जो या अधिकारियों का अनुचित, रोड़ा लगाने–काम को डिले करने का दुराग्रह–पूर्वाग्रह हो दोनों ही अनुचित व निंदनीय हैं।

***राज नेताओं से अपेक्षा:–अच्छे राजनेता, ब्यूरोक्रेट्स के डोमेंन नॉलेज व उनकी राय का, जन हित में सर्वोत्तम सदुपयोग करें। दाब, धौंस, बेहिसाब व नियम कायदों के ट्रांसफर्स, ओबलिगेसन्स, तंत्र के माध्यम से विरोधियों के हैरेसमेंट की राजनीति अल्पायु होती है। ऐसे अनेक उदाहरण गिनाए जा सकते हैं जहां ऐसे नेताओं का सूर्यास्त होते ज्यादा समय नहीं लगता। उनको यह समझना होगा कि अधिकारियों की काम करने की शक्तियां मर्यादित है। मंत्री लोग नियम कायदों में बदलाव के लिए सक्षम है, उन्हें कार्यकर्ताओं के काम करने के लिए इस राजमार्ग का उपयोग करना चाहिए। अधिकारियों से क्यों उलझन?

***कुछ बातें जो आम लोगों में चर्चा का विषय बनती है और इन सेवाओं के अधिकारियों की छवि खराब करती है:---

*जनता में यह चर्चा का विषय बनता है कि कई IAS, IPS – अधिकारी ट्रांसफर–पोस्टिंग लिए, पोलिटीसियन्स के माध्यम से लॉबीइंग करवाते है। ऐसा करने वाले अधिकारी निष्पक्ष नहीं जो सकते।

*यह भी जन विमर्श में सुनने को मिल जाता है कि कई अधिकारी, मामलों में बिना तथ्य की गहन परीक्षण व बिना अपना सुविचारित दृष्टिकोण बताए, मंत्रियों के कहने अनुसार टिप्पणियां लिख देते है।

*नीचे के स्तर के पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ अधीनस्थ अधिकारियों, कर्मचारियों का ज्यादा काम पड़ता है और नाइत्तफाकी भी होती है। कुछ कार्यकर्ता इन कार्मिकों को अपने बड़े नेताओं के जरिये परेशान करवाते है, अनुचित ट्रांसफर करवाते है। उनके वाजिब संरक्षण का दायित्व उच्चाधिकारियों का है किंतु कई बार इस दायित्व के निर्वहन के लिए प्रयास ही नही किए जाते। माना कि अंतिम निर्णय मंत्री का ही होगा किन्तु तथ्यात्मक विमत तो टिप्पणियों में हो।

*किन्ही मामलों में यह भी सुनने को मिल जाता है कि उच्चाधिकारी नें मौखिक आदेश देकर काम कर लिया किन्तु आवश्यकता पड़ने पर आदेश कन्फर्म नहीं करते हैं।

*बहुत से नियमों में व्याख्या करने की डिस्क्रिशनरी पावर अधिकारियों के पास होती है। इस अधिकार का जन हित में या किसी व्यक्ति के हित में उपयोग करने में कोताही नही बरतनी चाहिए बशर्ते कि इसमें किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को हानि न पहुंचे, उनके किसी अधिकार का हनन न होता हो। लेकिन बहुत से अधिकारी ऐसे मामलों को टालने ऊपर खिसकाने की बिमारी ग्रस्त होते है या कुछ अधिकारी कभी कभी स्वहित में दुरुपयोग करने से नही चूकते।

*पहले नहीं था किंतु कुछ समय से अखिल भारतीय सेवाओं के कुछ अधिकारियों पर पार्टी विशेष या कुछ सामाजिक–सांस्कृतिक–जातीय संगठनों की विचारधाराओं को ध्यान में रख कर कार्य करने की खुसर–फुसर भी सुनने को मिल ही जाती है।

*सबसे बड़ी बात जिसकी आम आदमी में चर्चा रहती है वह यह है कि बहुत से जनप्रतिनिधि और अधिकारी मिलकर भ्रष्टाचार करते है। दोनों में से अकेले के लिए यह करना सम्भव तो है किंतु अत्यंत कठिन व कंटक भरा।

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

आबादी : हम, वे और जो तथ्य हैं

डॉ रामावतार शर्मा

जब भी भूमि के किसी भाग पर आबादी वहां के संसाधनों से ज्यादा हो जाती है तो उस स्थान पर संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। जब संघर्ष प्रारंभ होता है तो लोग जाति, धर्म, कबीले आदि में बंट जाते हैं ताकि सामूहिक शक्ति का निर्माण हो और संघर्ष में विजय हासिल हो। तकरीबन यही बात प्रजातंत्र में सत्ता हासिल करने के लिए अपनाए गए हथकंडों में से भी एक होती है। ऐसा होना एक बड़ी नकारात्मक बात है पर होता यही है। इन परिस्थितियों में आबादी में बड़े स्तर का ध्रुवीकरण होने लगता है और छोटी–सी बात से ही हिंसा की चिंगारी हर तरफ आग की तरह फैल सकती है। आज कल हम सोशल मीडिया द्वारा सच और झूठ दोनों का जोरदार प्रचार देख रहे हैं। अब यदि कोई यह सोचता है कि यह दुष्प्रचार यूं ही चलता रहेगा तथा सत्ता पर कुछ लोगों का अधिकार बना रहेगा तो यह शायद एक बड़ी भूल सिद्ध हो। मानवीय अस्तित्व के इतिहास में आज तक कोई भी ऐसी क्रिया नहीं हुई है जिसकी प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रतिक्रिया नहीं हुई हो।

जब आबादी तेजी से बढ़ती है तो सामाजिक भाईचारा भी तेजी से समाप्त होने लगता है। आबादी बढ़ने से विकास दर भी बढ़ती है तो कुछ लोग शीघ्रता से संपन्न होने लगते हैं जिसके फलस्वरूप इन समूहों के कुछ लोगों में राजनीतिक महत्वाकांक्षा का जन्म होने लगता है।

राजनीतिक वर्चस्व के लिए लोगों का ध्रुवीकरण किया जाता है ताकि मत पेटी में एक ही दल को ज्यादातर मत मिलें। माहौल ऐसा बनाया जाता है कि मानो दूसरे लोग तुम्हारा सब कुछ छीनने को आतुर हैं, तुम्हारा धर्म, समाज और जाति खतरे में है, तुम्हारी संतान का भविष्य अंधकार में है। यदि इस विपत्ति से बचना है तो बस सिर्फ हमें ही चुनाव में सफल बनाओ और फिर बस चैन की बंसी बजाओ। पर ऐसा होता नहीं है चाहे जिसको सत्ता में बिठा दो। भला उन्ही का होता है जो सत्ताधारी लोगों को परोक्ष रूप से सत्ता में लाते हैं। आम जनता का तो पहले धर्म के आधार पर विभाजन होता है और फिर जाति और यहां तक कि गोत्र के नाम पर भी होने लगता है। समय के साथ तरह तरह की दरारें समाज के विभिन्न लोगों के मध्य अपना अस्तित्व जाहिर करने लगती हैं।

डॉक्टर हैंस रोसलिंग एक चिकित्सक और लेखक थे। उन्होने सत्य को उजागर करने के लिए शोध पर आधारित एक पुस्तक लिखी है फैक्टफुलनेस यानि तथ्यात्मकता। दूसरे उन्होंने देशों की सीमाओं को तोड़ पीड़ितों की सेवा के लिएं मेडिसिन सांस फ्रंटियर यानि सीमा मुक्त चिकित्सा सेवा नामक एक अंतरराष्ट्रीय संगठन स्थापित किया है। सत्य के पोषक मानवतावादी डॉक्टर रोसलिंग के अनुसार विश्व दो भागों में बंटा हुआ है वी यानि हम और देम यानि वे। हम से मतलब विकसित देश जहां लोग शिक्षित हैं, संपन्न हैं क्योंकि आबादी नियंत्रित है। वे मतलब तीसरी दुनिया के लोग, अशिक्षित, गरीब और बच्चों की प्लाटून के माता–पिता।

सन् 2002 के बाद तेज आर्थिक गतिविधियों के कारण भारत का एक वर्ग हम वाली स्थिति में तो पहुंच गया पर अब यहां राजनीति की प्रतिस्पर्धा के कारण एक बड़ी दरार पैदा हो गई है – हमारा और उनका। अब धर्म ठांथों नहीं धार्मिक चिह्नों को ही महत्व दिया जाने लगा है। हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि आदि सभी अपनी अपनी सेनाएं बनाने लगे हैं। विप्र सेना, परशुराम सेना, करणी सेना, जैश मोहम्मद, जांगिड़ सेना, इंडियन मुजाहिद्दीन, भीम सेना, सम्राट अशोक सेना, वीर तेजा जी सेना आदि असंख्य सेनाएं। चंद स्वार्थी और सत्ता लोलुप लोग देश की जनता को धर्म और जातियों में विभाजित करने में सफल होते जा रहे हैं और सत्ता में बैठे लोग स्वयं सरकार के द्वारा जारी आंकड़ों को गुमनामी में धकेल रहे हैं।

भारत के धर्म आधारित कुछ आंकड़े जो भारत सरकार द्वारा ही जारी किए गए हैं कई लोगों की आंखों को खोल सकते हैं यदि वे सचेत होकर इनका अध्ययन करें। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे की पहली रिपोर्ट (1990–92) के अनुसार भारत की कुल प्रजनन दर 3.39 बच्चे प्रति महिला थी जो 2019–21 में जारी पांचवी सर्वे में घट कर 1.99 रह गई है। कुछ लोग जो किसी गुप्त षडयंत्र द्वारा सत्ता हड़पने की बाते करते हैं उनके लिए इसी रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम कुल प्रजनन दर 1990–92 में 4.41 बच्चे प्रति महिला थी 2019–21 में यह दर 2.62 रह गई है। इस तरह से हम देख रहे हैं कि शहरीकरण, शिक्षा और जागरूकता के साथ जब आर्थिक दबाव आ जाता है तो लोग बच्चे कम पैदा करने लगते हैं। इसके साथ बाल स्वास्थ्य सुधरने से भी लोग बच्चों की अधिकता से दूर होने लगते हैं। डॉक्टर रोसलिंग सदा कहते थे कि हमें दुष्प्रचार से बच कर तथ्यों पर आधारित बातों को खोजने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि वास्तविकता की जानकारी बेहतर जीवन योजनाएं बनाने में सहायक होती है।

अब एक विचार पर मनन करने का शायद समय आ गया है कि इन तथाकथित धार्मिक, जातीय सेनाओं से देश को क्या नुकसान हो सकता है? चूंकि हम तीव्र सूचना विस्तारण के दौर से गुजर रहें हैं और युवाओं का एक वर्ग अपने आप को भविष्य का मुख्यमंत्री, मंत्री या विधायक माने घूम रहा है तथा उसी तरह की जीवनशैली येन केन प्रकारण बनाए हुए है। ये लोग ही इन तथाकथिक सेनाओं के सरदार बने हुए हैं। यदि किसी दिन इन लोगों को अपने सपने टूटते नजर आए तो ये हिंसक होते देर नहीं लगाएंगे। आर्थिक रूप से पीड़ित कितने ही लोग हिंसा के तांडव में सम्मिलित हो सकते हैं।

बड़े नेता निज स्वार्थ के लिए धर्म का सहारा लेते हैं तो दोयम दर्जे के नेता जातिगत विष वमन करेंगे।

स्वार्थों की इन लड़ाइयों में पहली बली सबसे कमजोर लोगों की और दूसरे स्थान पर प्रतिभावान युवाओं की लगेगी। हो सकता है आज हम इसे मनगढ़ंत वहम कहें पर इसकी संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता है।

हम और वे यह भेद सदा बना रहा है और आगे भी बना रहेगा। धरती पर सब कुछ एक बराबर कुछ नहीं होता है पर एक सभ्य समाज से उम्मीद की जाती है कि वह लोगों के बीच की खाई को कम बनाए रखे ताकि विशिष्ट परिस्थितियों में लोग खाई में लुप्त न हो जाएं। उन्हें खाई के पार जाने की संभावनाओं के साथ जीवन जीने की सुविधा मिलनी चाहिए।

–डॉ रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

दिव्यांग असीम अग्रवाल की गणतंत्र पर भारत देश के लिए भावभीनी काव्यांजलि

भारत आज़ादी से अब तक

15 अगस्त सन 47 को भारत था आजाद हुआ।
तब से ही एक नए युग का आगाज हुआ।
सदियों जुल्मों से जूझ रही धरती को यह वरदान मिला।
वर्ष 2 माह 11 दिन 18 में बन कर के हमें संविधान मिला।
तब से ही खत्म तानाशाही का अत्याचार हुआ।
26 नवंबर सन् 49 को संविधान तैयार हुआ।
गणतंत्र ने स्वतंत्रता को सही अर्थ दिया।
क्या है कर्तव्य और अधिकार यह तय किया।
इसके आने से राजतंत्र समाप्त हुआ।
इससे ही तो लोकतंत्र है व्याप्त हुआ।
संविधान से ही अधिकारों का है ज्ञान हुआ।
दलितों-पतितो हर वर्ग का है सम्मान हुआ।
अंग्रेजों के शोषण से देश को मुक्ति मिली।
भारत वर्ष को आत्मा विकास की युक्ति मिली।
जन-जन के मन में आजादी की उमंग उठी।
नव थल और जल में भारत की ही तरंग उठी।
जन गण मन हर मन में है गूंज रहा।

दिव्यांग असीम अग्रवाल

मन मुक्त गगन में उड़ने का पथ ढूंढ रहा।
जब से आया गणतंत्र देश में शांति हुई।
तब ही जाकर श्वेत और हरित यहां पर क्रांति हुई।
फिर विश्व पटल पर भारत का निर्यात बड़ा।
और धीरे-धीरे देशों से आयात घटा।
अर्थव्यवस्था में अपनी उदारीकरण का दौर आया।
उद्योगों में भी तब जाकर के जोर आया।
खेलों से भी बनता भविष्य यह विश्वास हुआ।
इस दौर में अब विज्ञान का भी है विकास हुआ।
स्वामी जी का स्वप्न सुनहरा सत्य हुआ।
भारत विश्व गुरु सिद्ध यह तथ्य हुआ।
हो युद्ध यहां हथियारों से या बीमारी से।
है देश खड़ा अब तो पूरी तैयारी से।
अब कौशल से हमें ढूंढना अवसर होगा।
भारत तब ही विकास पथ पर अग्रसर होगा।

–दिव्यांग असीम अग्रवाल,
पुत्र विजय कुमार अग्रवाल,
मदनगंज-किशनगढ़

75 वर्ष के खिलाड़ी अरुण सिंह ने कांस्य पदक जीता

- **मस्कट(ओमान) में कांस्य पदक जीत कर बढ़ाया जोधपुर और देश का गौरव**
- **पदक जीतकर लौटने पर अरुण सिंह बारहठ का सम्मान एवं अभिनंदन किया**

जोधपुर, (कासं)। शाला कीडा संगम केन्द्र गौशाला मैदान जोधपुर के 75 वर्ष आयु वर्ग के खिलाड़ी अरुण सिंह बारहठ ने मसकट ओमान आयोजित विश्वस्तरीय वर्ल्ड वेटरन टेबल टेनिस चैंपियनशिप–2023 भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए कांस्य पदक प्राप्त कर शाला संगम केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान और भारत का नाम गौरवान्वित किया है।

विश्वस्तरीय स्पर्धा में धाक जमाकर लौटने पर अरुण सिंह बारहठ का शाला क्रीड़ा संगम केन्द्र परिवार द्वारा सम्मान समारोह आयोजित कर उनका भावपूर्ण सम्मान एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश संदीप मेहता, विजय विश्नोई, पुष्पेन्द्र सिंह भाटी, जिला कलक्टर हिमांशु गुप्ता, मधुलिका एसीईएम फास्ट ट्रैक, एवं टेबल टेनिस एसोसिएशन के पदाधिकारी मुकुल गुप्ता, संजय गहलोत, कपिल मिर्धा, ज्योतिषाचार्य सुरेश श्रीमाली, जिला शिक्षा अधिकारी इसाफ खां जई, रफीक खां, सुमित्रा पंवार एवं शाला क्रीड़ा संगम केन्द्र प्रशिक्षक रीटा नरूका, राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, रानू सिंह चौहान, दिनेश भारती, राकेश सिंह देवडा, पुखराज चौधरी आदि समस्त स्टाफ द्वारा बारहठ एवं सुश्री सुनिधि दीवान का सम्मान किया गया। इन खिलाडियों को साफा, मोमेंटो एवं उच्च कोटि के रैकेट प्रदान कर सम्मान किया गया।

ठण्ड का असर बढ़ा, माउंट आबू में तापमान माइनस तीन डिग्री रहा

- **पारे में गिरावट के बाद मैदानी इलाकों सहित कई जगह बर्फ की परत जमी**
- **सर्दी के प्रकोप के बीच अलाव जलाकर लोग सर्दी से बचने का जतन कर रहे हैं**
- **माउंट आबू में बीते दस दिनों से पारे में उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है**

माउंट आबू, (निसं)। सिरोही जिले में दो दिन की राहत के बाद फिर से ठण्ड का असर बढ़ गया है। प्रदेश के एक मात्र हिल स्टेशन माउंट आबू में न्यूनतम तापमान पिछले दो दिनों से 1 डिग्री दर्ज किया गया जा रहा था। जिसमें बुधवार को 4 डिग्री की गिरावट दर्ज हुई। पारे में गिरावट के बाद बुधवार का न्यूनतम तापमान माईनस 3 डिग्री दर्ज किया गया। पारे में गिरावट के बाद मैदानी इलाकों सहित कई जगह बर्फ की परत जमीं पाई गई। वही अलसूबह माउंट आबू में धुंध भी छाई रही।

माउंट आबू में पारे में गिरावट के चलते लोगों की दिनचर्या में इसका खासा असर देखने को मिल रहा है। लोग देर तक घरों में दुबके रहते है। वही स्कूली बच्चों और नौकरी और मजदूरी पर जाने वाले स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

माउंट आबू में बीते दस दिनों से पारे में उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है। बीते दस दिनों में 8 दिन न्यूनतम तापमान जमाव बिंदु से नीचे रहा। वही दो दिनों से एक डिग्री थी जो बुधवार को 4 डिग्री गिरकर माईनस 3 डिग्री दर्ज किया गया। पारे में गिरावट के बाद माउंट आबू के मैदानी इलाकों, पहाडी इलाके में बहने वाले नालों, घरों व होटलों के बाहर खड़ी कारों की छत, बाहर रखे पानी व पेड़ पौधों पर बर्फ की हल्की परत जमीं पाई गई। वहीं सर्दी के प्रकोप के बीच अलाव जलाकर लोग सर्दी से बचने का जतन कर रहे है। वही घरों में रहने दुबके लोग रूम हीटर का प्रयोग कर रहे है। माउंट आबू में इस वर्ष लम्बे समय से सर्दी का प्रकोप देखा जा रहा है। माउंट आबू में एक तरफ जहां पारे में गिरावट दर्ज की जा रही है तो अलसुबह पहाड़ों और पोलो ग्राउंड सहित अन्य जगह धुंध छाई रही। धुंध से ठंडी हवाओं भी चलती रही। जिसके चलते बाहर लोगों की कंपकंपी छूट गई।

राशिफल गुरूवार 26 जनवरी, 2023

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र सांय 6:57 तक, शिव योग दिन 3:29 तक, बालव करण दिन 10:29 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मकर, चन्द्रमा–मीन, मंगल–वृष, बुध–धनु, गुरू–मीन, शुक्र–कुम्भ, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और रवियोग सांय 6:57 से आरम्भ होगा। आज बसन्त पंचमी (उत्तर प्रदेश, पूर्वा मध्यप्रदेश, बिहार, असम आदि राज्यों में)। आज तक्षक पूजा, श्री पंचमी, सरस्वती पूजन, रति काम महोत्सव, बागीश्वरी जयन्ती यात्रा दर्शन पूजा है। आज पंचक है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:39 तक, चर 11:19 से 12:39 तक, लाभ–अमृत 12:39 से 3:19 तक, शुभ 4:39 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:59

मेष
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

धनु
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

तुला
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।